तृतीय अधिकरण

शोध प्रवधि प्रक्रम

तृतीय अधिकरण

शोध आकल्प - मानव की प्रगति के लिए अनुसंसाधन नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित प्रक्रिया है। समस्या का प्रारम्भ जिज्ञासा से होता है, मानव की प्रकृति प्रारंभ से ही जिज्ञांसा रही है, वे निरतंर चिन्तनशील प्राणी रहा है, वह जानना चाहता है कि किन परिस्थितियों में, किन कारणों से, कौन से परिणाम निकलते है, यह कारण व समस्याओं को विकसित करते है। तथा उन समस्याओं का निदान कैसे किया जाता है। अनुसंसाधन मानव को प्रगति की ओर ले जाने वाले शक्तिशाली तथा आवश्यक उपकरण सिद्ध हुआ है, अनुसंसाधन का लक्ष्य प्रगति एवं श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करना है, सामान्य भाषा में अनुसंसाधन का अर्थ किसी भी नवीन ज्ञान को प्राप्त करने प्रयास माना जाता है। अनुसंसाधन एक ऐसी पंद्धति मानी जाती है, जिसके द्वारा किसी समस्या को हल करने के लिए क्रमबद्ध तरीके से ज्ञान एवं सत्य की खोज की जाती है, तथा कुछ सामान्य नियमों का निर्धारण किया जाता है, यह खोज वास्तविक तथ्यों पर निर्भर होती है।

पी.एन.कूक के अनुसार - किसी समस्या के संदर्भ में ईमानदारी, विस्तार, बुद्धिमानी तथ्यों उनके अर्थ तथा उपयोगिता की खोज करना ही अनुसंसाधन है। अंग्रेजी के रिसर्च में रिवर्ण आवृत्ति एवं गहनता का घोतक है, सर्च खोज का सामानार्थी है, इस प्रकार रिसर्च का अर्थ खोज की पुनरावृत्ति है।

जार्ज डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार - विश्लेषण की वैज्ञानिक विधि को अधिक अकाधिक होता है, और गहन रूप से चलाने का प्रक्रम अनुसंसाधन है।

जार्ज जे. मूले के अनुसार - कोई भी व्यवस्थित अध्ययन, जिसका विधान शिक्षा के विज्ञान रूप में विकसित करने के लिए किया हो, शैक्षिक अनुसंसाधन कहा जा सकता ह, रिसर्च शब्द के प्रत्येक अक्षर का अर्थ इस प्रकार है -

1. तार्किक चिन्तन

2. परिश्रमपूर्वक कार्य करना

3. सामाधान की खोज करना

4. शुद्धता निश्चितता

5. विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

वास्तव में अनुसंधान समस्या से आरंभ होता है, तथा परिकल्पना की प्रकृति के अनुरूप उपकरणों का निश्चय होता है, अत: अनुसंधानकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि उपकरणों विधियों एव यंत्रों का व्यापक ज्ञान हो, उसकी यह भी ज़ात होना चाहिए कि, इन उपकरणों से किस प्रकार के ऑकड़े प्राप्त होगें, उनकी क्या विशेषताएँ एवं सीमाएँ है, किन आवधारणाओं पर उनका प्रयोग आधारित है, तथा उनकी विश्वसनीयता, वैधता एवं वस्तुनिष्ठा क्या है?

अनुसंधानकर्ता के समझ यह समस्या आती है कि वह अपनी परिकल्पना में परीक्षण के ऑकड़ों का संग्रह किस विधि व किस उपकरण से करें, इस अवस्था में यह वर्तमान उपकरणों का विश्लेषण करने के पश्चात, यह ज्ञात करने का प्रयास करता है कि कौन-सा उपकरण हमारे कार्य में सार्थक होगा और तभी उसे चुन लिया है।

जाहोडा के अनुसार - तथ्यों के विश्लेषण के लिए शोध अभिकल्प एक प्रकार का संगठन हे, एक शोधकर्ता को इस बात पर विचार करना पड़ता है कि संदर्षन तथ्यों का एकत्रीकरण तथा उपकल्पनाओं को सिद्ध करने हेतु क्या प्रक्रिया अपनाई जाए, शोध कार्य को सही दिशा प्रदान करने हेतु शोधार्थी को एक रूपरेखा तैयार करनी पड़ती है। अध्ययन विषय की प्रकृति, स्वरूप एवं उद्देश्यों के अनुसार शोध अभिकल्प का निर्माण आवश्यक होता है, जब शोधार्थी शोध कार्य करना चाहता है, तो समस्स्या चयन के पश्चात् उसका सबसे प्रमुख कार्य शोध-प्रस्चना का निर्माण करना होता है, शोध प्ररचना की सहायता से व्यक्ति धन तथा समय का अपत्यय नहीं होता साथ ही शोधार्थी अधिक आत्मविश्वास

से अपने उद्देश्य की प्राप्त कर लेता है। अनुसंधान के लक्ष्य के आधार पर अध्ययन विषय के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करने के लिए पहले से बनाई गई रूपरेखा को ही सामान्यत: शोध प्ररचना कहा जाता है। चूंकि सामाजिक शोध अनेक प्रकार के होते है। एवं अध्ययनकर्ता अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समझकर किसी एक शोध प्ररसंचना का चुनाव करता है। शोध प्ररचना किस प्रकार चुनी जाए यह शोध अध्यनन की प्रकृति एवं उसके उद्देश्यों पर निर्भर करता है। यघपि सामाजिक शोध की अनिश्चतता की स्थिति को पूर्णरूप तो समाप्त नही किया जा सकता किन्तु वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग से अनिश्चितता के उन तत्वों को कम किया जा सकता है। जो जानकारी के अभाव में उत्पन्न होते है।

अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्प का मुख्य उद्देश्य समस्या का वैज्ञानिक व्याख्या के रूप में विवरण प्रस्तुत करना एवं पूर्ण तथा यथार्थ सूचनाएँ प्राप्त करना है, जिनके आभाव में वर्णात्मक विवरण वैज्ञानिक न होकर केवल दार्शनिक ही होता है। वैज्ञानिक विवरण का आधार वस्तुपरक ऑकड़े होते है, इन सम्पूर्ण सामाजिक प्रक्रियाओं का वर्णन वैज्ञानिक विधियों से किया जाता है, इसके लिए आवश्यक है कि समस्या के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किसी एक शोध रचना का निर्माण किया जाये। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु विवरणात्मक प्ररचना के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

सर्वेक्षण विधि-

एफ.एल. ब्रिटनी के अनुसार- सर्वेक्षण आधुनिक, सामाजिक विज्ञान की शब्दावली के अनुसार एक व्यवस्थित प्रयास है, इसमें वर्तमान में सामाजिक संस्थानों के स्तर समूह एवं क्षेत्रों के सम्बन्ध में व्याख्या से संबंधित बातों का उल्लेख किया गया है।

मूले के अनुसार- वर्णनात्मक सर्वेक्षण सम्बन्धी अनुसंधान शिक्षा में सबसे अधिक व्यवहार में आता है, यह एक विस्तृत वर्गीकरण है, जिसके अंतगर्त अनेक विशिष्ट विधियों तथा प्रक्रियाएँ आती है, जो उद्देश्य की दृष्टि से समान

होते हैं।

ट्रेवर्स के अनुसार-सर्वेक्षण विधि में विभिन्न विषयों का वर्गीकरण कर अनेक तथ्यों से संबंधित ज्ञान का संकलन किया जाता है।

फेयर चाइल्ड के अनुसार- एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन या उसके किसी एक पक्ष के संबंध में व्यवस्थित और पूर्ण तथ्य संकलन और तथ्य विश्लेषण का नाम ही सर्वेक्षण है।

फरलिजंर के अनुसार- सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है, जिसके अंतर्गत व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्या का अध्ययन, उसमें से चयनित प्रतिदर्श के आधार पर इस आशय से किया जाता है कि, उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनौवैज्ञानिक चरो घटनाक्रमों विवरणों तथा पारस्पारिक अंत: सम्बन्ध का ज्ञान उपलब्ध हो सकें।

सर्वेक्षण विधि की विशेषताएँ -

1. अधिक संख्या में तथ्यों की एकत्रित किया जाता है।

2. इसका सम्बन्ध व्यक्ति की विशेषताओं से न होकर पूर्ण जनसंख्या या न्यादर्श साख्यिंकी से होता है।

3. समस्या तथा इसके उद्देश्यों को भली प्रकार परिभाषित किया जाता है। प्राप्त प्रदत्तों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण एवं व्यवस्था तथा निष्कर्षो से तर्कयुक्त प्रतिवेदन की आवश्यकता होती है।

4. इस विधि में वैज्ञानिक नियमों के संगठन स्वरूप को विकसित करने की आकांक्षा नहीं की जाती है, फिर भी यह मौलिक प्रवृत्ति के अनुसंधान के आधार निर्मित तथ्य प्रस्तुत करती है।

5. इस विधि में तथ्यों का वर्णन शब्दों तथा गणितीय संकेतों में व्यक्त किया जाता है।

6. सर्वेक्षण पर्याप्त रूप से विवधतापूर्ण होते है, कुछ सर्वेक्षण घटनाओं की आकृतियों से सम्बन्धित होते है, जबकि अन्य घटनाओं के मध्य संबंध स्थापित करने का प्रयास करते है।

7. सर्वेक्षण गुणात्मक व परिणात्मक दोनों प्रकार के होते है। सर्वेक्षण विधि समस्याओं के समाधान हेतु महत्वपूर्ण सूचनाओं को प्रदान करती है, तथा भावी अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त करती है।

8. यह **"क्रास सैक्शन"** विधि है, जो वर्तमान परिस्थतियों पर आधारित है।

शोध अध्ययन के चर-अध्ययन की प्रत्येक इकाई जिसका कुछ मूल्य हो चर बन जाती है। अर्थात् चर वह लक्षण या गुण है, जिसमें अनेक प्रकार के मूल्य हो सकते है।

गैरेट के अनुसार-चर वह लक्षण या गुण है, जिनकी मात्रा में परिवर्तन होता है, और यह परिवर्तन किसी माप या आयाम पर परिवर्तित होते है।

करलिगंर के अनुसार- चर वह गुण है, जिसके विभिन्न मूल्य हो सकते है। चर दो प्रकार के होते है।

शिक्षा और मनोविज्ञान में अनुसंसाधन अभिकल्पों का विकास अनुसंसाधन के निष्कर्षो का निरर्थक रूप से प्रभावित करने वाले ब्राहय कारकों के निस्कासान पर नियंत्रण के लिए हुआ अनुसंसाधन अभिकल्प समस्या से सम्बन्धित परिकल्पना के कथन से लेकर ऑकड़ों के अंतिम विश्लेषण तक की सभी क्रियाओं के योजना की यह रूपरेखा है, जो शोध प्रश्न के उत्तर प्राप्त करने के लिए की जाती है,इस प्रकार यह व्यापक कार्य योजना है, जिसका अंतिम उद्देश्य अनुसंसाधन कर्ता के शोध पृष्ठ का ऐसा उत्तर प्रदान करता है, जो यथासंभव वेद वस्तुनिष्ठ परिशुद्ध ओर किफायती हो, इसलिए इससे स्पष्ट रूप से निम्नलिखित बिन्दुओं का उल्लेख होता है-

1. कौन से चर सक्रिय होगें, कौन से चर विश्लेषक, जिसके अन्वेषक विश्लेषक चरों का वर्गीकरण कर सके, करने के लिए क्या अपनायी जाए तथा सक्रिय चरों में हेर-फेर करके आश्रित चरों पर उनके प्रभाव का अध्ययन कर सके।

2. किन प्रेक्षणों पर ध्यान देना है, ऐसे कितने प्रेक्षण करने है।

3. ऑकड़ों को इकट्ठा करने तथा उनका विश्लेषण करने की क्या नीति अपनायी जाए? तथा अन्वेषण के अंतर्गत उठने वाली समस्याओं का निराकरण कैसे किया जाए?

किसी भी कार्य कि सफलता बहुत सीमा तक इस पर निर्भर करती है, कि कार्य कि योजना का प्रारंभ किस ढंग से निर्मित किया गया है, फिर भी संदर्भित साहित्य के प्रकाश में समस्या को निर्धारित करने के पश्चात् शोधकर्ता के लिए ये नितांत आवश्यक है। वह निश्चित ढंग से शोध प्रारूप का निर्माण करें।

किसी अनुसंसाधन की सफलता सुनियोजित सकंल्पना के मार्ग में आने वाली अनेक कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करा सकती है, इसके लिए अनुसंसाधनकर्ता जितना भी अध्ययन चितंन एवं विशेषज्ञों के विचारों का आदान-प्रदान करता है, अनुसंसाधन कार्य उतना ही सुचारू व वैज्ञानिक रूप से होता है, वास्तव में अनुसंसाधन समस्या से आरंभ होता है, तथा परिकल्पना की प्रकृति के अनुरूप उपकरणों का निश्चय होता है।

विस्तृत जानकारी प्रप्ति हेतु-

न्यायदर्श चयन की प्रणाली :-

न्यायदर्श राय व भटनागर के शब्दों में - किसी जनसंख्या में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञान करने हेतु उसकी कुछ इकाईयों का चयन कर लिया जाता है, इसे चुनने की प्रक्रिया को न्यायदर्श कहते है।

देवनिदर्षन न्यादर्श के अनुसार- इस विधि में समविष्ट के सब सदस्यों में से प्रत्येक प्रतिदर्श के चुने जाने की संभावना समान होती है, प्रस्तुत शोध अध्ययन

में शोधार्थी ने कॉलेज में से किसी भी ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के कॉलेज का चयन किया गया है।

समप्रोयजन न्यायदर्शन विधि- इस विधि से तात्पर्य है, जब शोधकर्ता जानबूझकर किसी विशेष उद्देश्य से अपने निर्णयानुसार अध्ययन हेतु कुछ इकाईयों का चयन करता है, इस प्रकार की विधि में शोधकर्ता का निर्णय तथा उद्देश्य ही प्रधान रहता हे, इसमें संयोग पर कुछ भी नहीं छोड़ा जाता है।

सैलिज तथा उनके सहयोगियों के अनुसार - यदि शोधकर्ता उचित निर्णय तथा एक उपयुक्त निर्देश व्यूह रचना का प्रयोग करता है, तो संभवत: वह अपने अध्ययन के निर्णय के निर्देश में उन तत्वों को सम्मिलित करने में सफल हो जाता है, जो उसके अध्ययन की आवश्यकता को पूरा करते है, इस प्रकार इस विधि में अनुसंधानकर्ता सम्पूर्ण क्षेत्र में से अपनी इच्छानुसार ऐसी इकाईयॉ चुन लेता है, जो उसके विचार में समग्र का प्रतिनिधी करती है, निर्देशन में किन इकाईयों को चुनना है, यह चुनने वाले की पूर्णत: इच्छा पर निर्भर करता है,इस प्रकार छॉटी गई निर्देशन इकाईयों के गहन अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर वह पूरे समग्र के बारे में निष्कर्ष निकाल लेता है। समप्रयोजन निर्देशन वही है, जहॉ समग्र की इकाइयों की विशेषता तथा प्रकृति के संबंध में ज्ञान होना, इस विधि से संभव नहीं है।

सैलिज एवं अन्य शब्दों में उद्देश्यपूर्ण निर्देशन के पीछे आधारभूत मान्यता यह है कि उचित निर्णय तथा उपयुक्त कुशलता के साथ व्यक्ति निर्देशन में सम्मिलित करने हेतु उन मामलों को चुन सकता है, तथा इस प्रकार के निर्देशन पर विश्वास कर सकता है, जो उसकी आवश्यकतानुसार संतोषजनक हैं।

सप्रोजन निर्देशन के गुण -

1. यह विधि अत्यन्त सरल होती है, एवं ऐसे अध्ययन क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है, जिनमें लगभग एक ऐसी इकाईयॉ हो या जहॉ कुछ इकाईयॉ इतनी महत्वपूर्ण हो कि उनका शामिल करना आवश्यक है।

2. यह पद्धति कम व्ययशील होती है, क्योंकि निर्देशन का आकार छोटा होता है।

3. यद्यपि आकार छोटा होता है, तथा अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण होता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल ग्रामीण, शहरी मान्यता प्राप्त बी.एड. कॉलेज के विद्यार्थियों का चयन किया यह समप्रयोजन विधि पर ही आधारित है।

चयनित न्यादर्श

क्रं.	विद्यालय स्वरूप	संख्या	चयनित विद्यार्थी
1.	ग्रामीण विद्यालय	1	50
2.	शहरी विद्यालय	1	50